अध्यापक शिक्षा में एक नये युग की शुरुआत

श्रीमती कविता भारद्वाज
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, शाहपुरा बाग, जयपुर

प्रस्तावना

शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण और जटिल गतिविधि है, विद्यार्थियों को शिक्षित करने का दायित्व अध्यापकों का है, इसलिए अध्यापक शिक्षण सम्भवतः और भी निर्णायक एवं जटिल प्रक्रिया है सर्वविदित है कि प्राचीन काल में अध्यापकों के प्रशिक्षण की कोई व्यवस्था नहीं थी, वर्तमान समय में हम देखे तो परिस्थिति इसके विपरित है, शिक्षा महाविद्यालय की गिनती निरंतर बढ़ रही है। नुमानतः 2009-2010 में तो पूरे विश्व में शिक्षा महाविद्यालयों की संख्या तेजी से बढ़ी है। ऐसा लगने लगा है कि अध्यापक शिक्षा में नये युग की शुरुआत हो रही है।

अध्यापक शिक्षा के सबसे बड़ी चुनौती यह है कि शिक्षकों को किस प्रकार शिक्षित और प्रशिक्षित किया जाए ताकि वे किसी भी परिस्थिति मेंशिक्षण में गुणवत्ता और उत्कृष्टता का त्याग किए बिना व्यक्तिगत विशिष्टता और सामाजीकरण के बीच एकता कायम कर सकें। आज शिक्षक प्रशिक्षण में आवष्यकता है स्वतंत्रता और रचनाशीलता की गुणवत्तापूर्ण शिक्षण में कुछ अनुप्राणित करने वाले संकेतक है। जिनमें चिन्तन भावना, भागीदारी, ग्रहणशीलता और प्रेम शामिल है।

आत्मविश्लेषण, अज्ञात, अनुपलब्ध, प्रसन्नता प्रकटित की खोज की खोज में उद्यमशीलता की आवश्यकताओं को देखते हुए एक अध्यापक शिक्षा में एक मूलभूत और मुख्य बदलाव नजर आ रहा है कि सीखने-सीखाने की प्रक्रिया में अब शिक्षार्थी को मुख्य रूप में नहीं रखा जा सकता तथा ऐसे नीरस जानकारी और स्तरहीन ब्योरे तक सीमित नहीं रखा जा सकता है। मेरी ओर से आत्ममंथन एवं चिन्तन वास्तव का प्रयास मात्र है। वास्तव में जैसे शिक्षक होंगे वैसे ही संस्थान होंगे। किसी संस्थान में समुचित और वांछनीय बुनियादी सुविधाएँ जैसे भवन कक्षाओं के लिए कमरें, प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, खेल के मैदान, छात्रावास और अन्य सुविधाएँ हो सकती है। परन्तु उसमें सक्षम, योग्य, परिश्रमी, समर्पित और ईमानदार शिक्षक अगर न्यूनतम संख्या में भी न हो तो शिक्षा और शिक्षण का प्रयोजन असफल हो जाता है। क्योंकि किसी शिक्षा संस्थान में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से शिक्षार्थियों के बीच अनेक व्यक्तिगत भिन्नताएँ और समानताएँ होती है।

अतः एक आदर्श शिक्षक जानता है कि वह कक्षा के विषय में किस प्रकार का व्यवहार करेगा। निःसन्देह उससे उम्मीद की जाती है कि वह शिक्षार्थी को यथा सम्भव समाज के प्रति समर्पित बनाने के लिए शिक्षण और प्रशिक्षण को न्यायोचित सहमति के साथ विशिष्टतया प्रदान करने के स्वर्णिम सिद्धांत का पालन करें।

आज शिक्षा जगत एक निर्णायक मोड़ पर पहुँच गयी है, जहाँ कम्प्यटू र के उदय के साथ स्मरण शक्ति पर शिक्षा की अत्यधिक निर्भरता समाप्त हो गई है।

ऐसे में सीखने सीखाने की निष्क्रीयता दूर करनी होगी और उसके स्थान पर अध्यापक शिक्षा में व्यापक परिवर्तन करने है, जिनमें बोध और संवेदनशीलता, सौन्दर्य बोध और अन्तरतम में उठने वाले गहन सवालोंका ध्यान देना होगा।

शिक्षा कोई भौतिक वस्तु नहीं है जिसे डाक या शिक्षक द्वारा विपरीत किया जा सके। उर्वर और बच्चें की भौतिक और सांस्कृतिक जमीन में होती है। इस कार्य मेंशिक्षकों की भूमिका और गरिमा को अवश्य सुदृढ़ एवं रेखांकित किया जाना चाहिए। क्योंकि विद्यार्थी बड़ो से अधिक समझते और निरीक्षण करते है, इस लिए ज्ञान के के रूप में उनकी सशक्त भूमिका को समझने की आवश्यकता है। 21वीं सदी में अध्यापक शिक्षा को कई दिशाओं में नया रूप दिया जा सकता हैः-

1. शिक्षण में गुणवत्ता के संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान।
2. विद्यालयी शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम को नया रूप देना।
3. पाठ्यपुस्तकों और सीखने सीखाने सम्बन्धी सामग्री में संशोधन और परिष्कार।
4. शिष्य के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा को विशिष्ठता प्रदान करें।
5. शिक्षार्थी की देखभाल और उनमें रचनात्मक और आलोचनात्मक ढंग से सोचने का कौशल पैदा करना।

सेवा पूर्व अध्यापक शिक्षा का सामान्य रूप से शिक्षा के क्षेत्र में और विशेष रूप से अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है

सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षणार्थी, अपनी रुचि और ईमानदारी के बावजूद सर्वांगीण विकास में बेहतर भागीदारी नहीं निभा पाते और वे शिक्षण के चुनौतीपूर्ण कार्य के प्रति न्याय नहीं कर पातें।

1. सेवा पूर्व शिक्षक विद्यार्थी, अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम और उनकी विभिन्न गतिविधियों को अरुचि पूर्ण ढंग से लेते है क्योंकि उनमें से ज्यादातर एक से अधिक परीक्षओं की तैयारी में लगे रहते है।
2. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सेवा पूर्व शिक्षा के प्रति शैक्षिक और प्रशासनिक स्तर पर संकीर्ण दृष्टिकोण अपनाने से अध्यापक शिक्षा की प्रगति में रुकावट आती है।
3. शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा विशिष्ट गतिशील और प्रेरक अनुदेशों के अभाव के कारण छात्रध्यापकों का शिक्षण और प्रशिक्षण के जगत में कुछ नया कर दिखाने का सपना चूर हो जाता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त प्रयोजन के लिए निम्न मुद्दों पर विचार किया जा सकता है-

1. विषय वस्तु के ज्ञान का अभाव दूर करना समुचित अभ्यास कराना।
2. नवीन शिक्षण पद्धतियों में नियमित और व्यवस्थित प्रशिक्षण।
3. कमजोर संस्थानों में गुणवत्ता और उत्कृष्टता सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों के द्वारा ज्ञान का आदान प्रदान कार्यक्रम।
4. सही विचारों सही धारणाओं, सही चिन्तन और सही नीतियों की ओर शिक्षकों का ध्यान आकर्षित करना।
5. स्वअध्ययन और स्वअनुभव के सन्दर्भ में कौशल हासिल करने के सिद्धांत को रेखांकित करते हुए

शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाने की भावना को बढ़ावा देना।

शिक्षण की व्यावसायिक दृष्टि से ज्ञानवान बनाने के अत्यन्त भरोसेमन्द और सुदृढ़ कार्यक्रम के लिए सर्वप्रथम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्ष्य यह है कि शिक्षक को किस प्रकार विद्यार्थियों की प्रगति में प्रेरक की भूमिका अदा करने का प्रशिक्षण दिया जाए। अतः कहा जा सकता है कि प्रतिबद्ध और प्रवीण शिक्षक तैयार करने के लिए सशक्त और स्थिर अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम शुरू किया जाना चाहिए ताकि विभिन्न आयामों में सुदृढ़ प्रगति और सक्षमता सुनिष्चित की जा सकें।

समस्त सजग व्यक्तियों के लिए अध्यापक शिक्षा का काम विकासात्मक, विविधतापूर्ण सजीव लक्ष्यों का विस्तार करने वाला है।

अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षण और अनुसंधान से सम्बद्ध विभिन्न पक्षों चाहे निजी संस्थान, मुक्त विश्वविद्यालय या विश्व विद्यालयों के शिक्षा विभागों, शिक्षा में आधुनिक अध्ययन केन्द्रों और विष्वविद्यालयों के तहत कॉलेजों के बीच समन्वय का स्वस्थ वातावरण बनाने की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. शर्मा (डॉ.) आर.ए.चतुर्वेदी (डॉ.) शिक्षा, अध्यापक शिक्षा इण्टरनेशनल पब्लिसिंग हाऊस मेरठ (648-649)
2. अग्रवाल जे.सी. 21वीं शताब्दी के सन्दर्भ में अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
3. भट्टाचार्य (डॉ.) जी.सी. अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
4. सक्सेना एन.आर.मिश्रा, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. मंगल (डॉ.) के.पी आधुनिक भारतीय शिक्षा अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।
6. पाठक पी.डी. भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।